

गजराज और मूषकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे बसा नगर व्यापार का केन्द्र था। फिर आए उस नगर के बुरे दिन, जब एक वर्ष भारी वर्षा हुई। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया।

लोगो के लिए पीने का पानी न रहा और देखते ही देखते नगर वीरान हो गया अब वह जगह केवल चूहों के लायक रह गई। चारों ओर चूहे ही चूहे नजर आने लगे। चूहो का पूरा साम्राज्य ही स्थापित हो गया। चूहों के उस साम्राज्य का राजा बना मूषकराज चूहा। चूहों का भाग्य देखो, उनके बसने के बाद नगर के बाहर जमीन से एक पानी का स्रोत फूट पड़ा और वह एक बड़ा जलाशय बन गया। नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था। जंगल में अनगिनत हाथी रहते थे। उनका राजा गजराज नामक एक विशाल हाथी था। उस जंगल क्षेत्र में भयानक सूखा पड़ा। जीव-जन्तु पानी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। भारी भरकम शरीर वाले हाथियों की तो दुर्दशा हो गई।

हाथियों के बच्चे प्यास से व्याकुल होकर चिल्लाने व दम तोड़ने लगे। गजराज खुद सूखे की समस्या से चिंतित था और हाथियों का कष्ट जानता था। एक दिन गजराज की मित्र चील ने आकर खबर दी कि खंडहर बने नगर के दूसरी ओर एक जलाशय हैं। गजराज ने सबको तुरंत उस जलाशय की ओर चलने का आदेश दिया। सैकड़ों हाथी प्यास बुझाने झोलते हुए चल पड़े। जलाशय तक पहुंचने के लिए उन्हें खंडहर बने नगर के बीच से गुजरना पड़ा। हाथियों के हजारों पैर चूहों को रौंदते हुए निकल गए। हजारों चूहे मारे गए। खंडहर नगर की सड़कें चूहों के खून-मांस के कीचड़ से लथपथ हो गई। मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। हाथियों का दल फिर उसी रास्ते से लौटा। हाथी रोज उसी मार्ग से पानी पीने जाने लगे।

काफी सोचने-विचारने के बाद मूषकराज के मंत्रियों ने कहा “महाराज, आपको ही जाकर गजराज से बात करनी चाहिए। वह दयालु हाथी हैं।”

मूषकराज हाथियों के वन में गया। एक बड़े पेड़ के नीचे गजराज खड़ा था। मूषकराज उसके सामने के बड़े पत्थर के ऊपर चढ़ा और गजराज को नमस्कार करके बोला “गजराज को मूषकराज का नमस्कार। हे महान हाथी, मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ।”

आवाज गजराज के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। दयालु गजराज उसकी बात सुनने के लिए नीचे बैठ गया और अपना एक कान पत्थर पर चढ़े मूषकराज के निकट ले जाकर बोला “नन्हें मियां, आप कुछ कह रहे थे। कृपया फिर से कहिए।” मूषकराज बोला “हे गजराज, मुझे चूहा कहते हैं। हम बड़ी संख्या में खंडहर बनी नगरी में रहते हैं। मैं उनका मूषकराज हूँ। आपके हाथी रोज जलाशय तक जाने के लिए नगरी के बीच से गुजरते हैं। हर बार उनके पैरों तले कुचले जाकर हजारों चूहे मरते हैं। यह मूषक संहार बंद न हुआ तो हम नष्ट हो जाएंगे।”

गजराज ने दुख भरे स्वर में कहा “मूषकराज, आपकी बात सुन मुझे बहुत शोक हुआ। हमें ज्ञान ही नहीं था कि हम इतना अनर्थ कर रहे हैं। हम नया रास्ता ढूँढ लेंगे।”

मूषकराज कृतज्ञता भरे स्वर में बोला “गजराज, आपने मुझ जैसे छोटे जीव की बात ध्यान से सुनी। आपका धन्यवाद। गजराज, कभी हमारी जरूरत पड़े तो याद जरूर कीजिएगा।”

गजराज ने सोचा कि यह नन्हा जीव हमारे किसी काम क्या आएगा। सो उसने केवल मुस्कराकर मूषकराज को विदा किया। कुछ दिन बाद पड़ोसी देश के राजा ने सेना को मजबूत बनाने के लिए उसमें हाथी शामिल करने का निर्णय लिया। राजा के लोग हाथी पकड़ने आए। जंगल में आकर वे चुपचाप कई प्रकार के जाल बिछाकर चले जाते हैं। सैकड़ों हाथी पकड़ लिए गए। एक रात हाथियों के पकड़े जाने से चिंतित गजराज जंगल में घूम रहे थे कि उनका पैर सूखी पत्तियों के नीचे छल से दबाकर रखे रस्सी के फंदे में फंस जाता है। जैसे ही गजराज ने पैर आगे बढ़ाया रस्सा कस गया। रस्से का दूसरा सिरा एक पेड़ के मोटे तने से मजबूती से बंधा था। गजराज चिंघाड़ने लगा। उसने अपने सेवकों को पुकारा, लेकिन कोई नहीं

आया।कौन फंदे में फंसे हाथी के निकट आएगा? एक युवा जंगली भैंसा गजराज का बहुत आदर करता था। जब वह भैंसा छोटा था तो एक बार वह एक गड्ढे में जा गिरा था। उसकी चिल्लाहट सुनकर गजराज ने उसकी जाअन बचाई थी। चिंघाड़ सुनकर वह दौड़ा और फंदे में फंसे गजराज के पास पहुंचा। गजराज की हालत देख उसे बहुत धक्का लगा।

वह चीखा “यह कैसा अन्याय है? गजराज, बताइए क्या करूं? मैं आपको छुड़ाने के लिए अपनी जान भी दे सकता हूं।”

गजराज बोले “बेटा, तुम बस दौड़कर खंडहर नगरी जाओ और चूहों के राजा मूषकराजा को सारा हाल बताना। उससे कहना कि मेरी सारी आस टूट चुकी हैं।”

भैंसा अपनी पूरी शक्ति से दौड़ा-दौड़ा मूषकराज के पास गया और सारी बात बताई। मूषकराज तुरंत अपने बीस-तीस सैनिकों के साथ भैंसे की पीठ पर बैठा और वो शीघ्र ही गजराज के पास पहुंचे। चूहे भैंसे की पीठ पर से कूदकर फंदे की रस्सी कुतरने लगे। कुछ ही देर में फंदे की रस्सी कट गई व गजराज आजाद हो गए।

सीख: आपसी सदभाव व प्रेम सदा एक दूसरे के कष्टों को हर लेते हैं।

गणराज और भुवकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे महा नगर वृषार का कैवृषा द्विज सुभ उभ नगर के वृषे दिन, एक एक वधु हारी वधु करे। नदी ने सपना राभु मल्ल दिया।

लेगें के लिए पीने का पानी न रका और दोपडे की दोपडे नगर वीरान के गया सुभ वरु एगल केवल मुदें के लायक ररु गरें। पारें और मुदें की मुदें नएर मुने लगे। मुदें का पूरा भाभासू की भूपिउ के गया। मुदें के उभ भाभासू का गार मना भुवकराज मुका। मुदें का हागृ दोपे, उनके मभने के गार नगर के गारु एभीन में एक पानी का भुउ द्रए पका और वरु एक मरा एलामय मन गया। नगर में कुळ की दुर एक भना एंगल था। एंगल में मनगिनउ काषी ररुडे थे। उनका गार गणराज नभक एक विमल काषी था। उभ एंगल ब्रु में रुथानक भापा पका। सीव-एत्रु पानी की उलाम में उपर-उपर भारे-भारे द्विजने लगे। हारी हरकभ मरीर वाले काषिथे की उे द्रुमा के गरें।

काषिथे के मसुे पृथम में वृकुल केकर गिल्लाने व रभउेदने लगे। गणराज एरु भूपि की मभभू में गिउिउ था और काषिथे का कधु रनउ था। एक दिन गणराज की भिउ गील ने मुकर एगल की कि पंरुकर मने नगर के द्रुमरी और एक एलामय है। गणराज ने मगके रुंउ उभ एलामय की और एलने का मुदेंम दिया। मैकर काषी पृथम वृगाने कैलउे का एल पठे। एलामय उक पंरुगने के लिए उने, पंरुकर मने नगर के गीए में गुएरना पका। काषिथे के रुएरें पेर मुदें के रेंउउे का निकल गाए। रुएरें मुदें भारे गाए। पंरुकर नगर की मरुके मुदें के पुन-भाम के कीएरु में लघपघ के गरें। भुभीगउ वकीं एडु नकीं करें। काषिथे का दल द्विज उभी राभु में लैए। काषी रैए उभी भाज में पानी पीने एने लगे।

कादी भेएने-विगारने के गार भुवकराज के भंदिथे ने कला “भकाराज, सुपके की एकर गणराज में गउ करनी गारिग। वरु दयालु काषी है।”

भुवकराज काषिथे के वन में गया। एक मरु पेरु के नीए गणराज एरु था।

भुवकराज उभके मभने के मरु पडुर के उपर एरु और गणराज के नभभूर करके गैला “गणराज के भुवकराज का नभभूर। के भवान काषी, मैं एक विवेदन करना गारुउ करे।”

सुवए गणराज के कांने उक नकीं पंरुग रकी थी। दयालु गणराज उभकी गउ मुने के लिए नीए गैंग गया और सपना एक कान पडुर पर एरु भुवकराज के निकल ले एकर गैला “नने, भियां, सुप कुळ कर रके थे। कृपया द्विज में कारिग।”

भुवकराज गैला “के गणराज, भूपि मुका करुडे है। रुभ गरी भापृ मैं पंरुकर मनी नगरी में ररुडे है। मैं उनका भुवकराज है। सुपके काषी रैए एलामय उक एने के लिए नगरी के गीए में गुएरउे है। कर मार उनके पेरें उले कुएले एकर रुएरें मुदें भरुडे है। वरु भुवक भंरुकर गंद न रुमु उे रुभ नधु के एएंगे।”

गणराज ने द्राप रुरे धूर में कला “भुवकराज, सुपकी गउ मुने भूपि मरुउ मेक रुमु। रुभे हन की नकीं था कि रुभ उउना मनरु कर रके है। रुभ नया राभु द्रुद लैगो।”

भुखकण्ड कुतुहल उरें भ्रम में गैला “गण्डगण्ड, सुपने भ्रम ऐमे छैए एवी की गउ प्रान मे भुनी। सुपका एतुवाए। गण्डगण्ड, कही रुभारी एकरउ पके उे वाए एकर कीएएगा।”

गण्डगण्ड ने भेया कि वरु नरु एवी रुभारे किभी काम कू मारगा। मे उभने केवल भुभूराकर भुखकण्ड के विद्या किया। कुळ दिन गउ पकेभी ऐम के गण्ड ने मेन के भएगुउ गनने के लिए उभमे काषी माभिल करने का निरुध लिया। गण्ड के लेग काषी पकउने मार। एंगल मे मुकर वे एपणप करे प्रकार के एल गिळकर गले एउे कै। मैकके काषी पकउ लिए गार।

एक गउ काषिये के पकउ एने मे गिंटिउ गण्डगण्ड एंगल मे भुभूरे के कि उनका पेर भुपी पडिये के नीठे कल मे एकर गपे रभी के छै मे छम एउे कै। ऐमे की गण्डगण्ड ने पेर मुगे गण्डावा रभू कम गवा। रभू का एभरा भिरा एक पेर के भेए उने मे भएगुडी मे गंण वा। गण्डगण्ड िगभाउने लगा। उभने सुपने मेवके के प्रकार, लेकिन केरे नकी मुया। के न छै मे छमे काषी के निकए मारगा? एक ववा एंगली हैमा गण्डगण्ड का गउउे मुएर करउ वा। एम वरु हैमा छैए वा उे एक गउ वरु एक गउ मे ए गिरा वा। उभकी गिळारुए भुनकर गण्डगण्ड ने उभकी एभन गण्डां थी। िगभाउं भुनकर वरु छैए उर छै मे छमे गण्डगण्ड के पाम पकेगा। गण्डगण्ड की कालउ टाप उमे गउउे एकु लगा।

वरु गीपा “वरु कैमा मनुष्य कै? गण्डगण्ड, गउउए कू कं? मै सुपके कूउने के लिए सुपनी एन ही टै मकउ कू।”

गण्डगण्ड गैले “गैए, उभमम छैएकर पंरुकर नगरी एउ उर मुके के गण्ड भुखकण्ड के भार काल गउना। उभमे करुना कि मेरी भारी मुम एए एकी कै।

हैमा सुपनी प्री मक्ति मे छैए-छैए भुखकण्ड के पाम गवा उर भारी गउ गउरां। भुखकण्ड उरंउ सुपने गीम-डीम, मैनिके के भाष हैमे की पी० पर गैए उर वे मीपू की गण्डगण्ड के पाम पकेगा। मुके हैमे की पी० पर मे कुएकर छैए की रभी कुउने लगे। कुळ की टैर मे छैए की रभी कए गरें व गण्डगण्ड मुएए के गार।

भीप: सुपभी मएरुव व पेममए एक एभरे के कर्षे के कर लेउे कै।

मनुवाए - पूरु वरु